विपश्यना

साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2561, श्रावण पूर्णिमा, 7 अगस्त, 2017 वर्ष 47 अंक 2

For online **Patrika** in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

मुञ्च पुरे मुञ्च पच्छतो, मज्झे मुञ्च भवस्स पारगू।
सब्बत्थ विमुत्तमानसो, न पुनं जातिजरं उपेहिसि॥

धम्मपद - ३४८, तण्हावग्गो.

आगे (भूत), पीछे (भविष्य) और मध्य (वर्तमान) की (सारी बातों को) छोड़ दो अर्थात सभी स्कंधों को त्याग दो (और उन्हें छोड़ कर) भव (-सागर) के पार हो जाओ। सब ओर से विमुक्तचित्त होकर (तुम) फिर जन्म, बुढ़ापा (और मृत्यु) को नहीं प्राप्त होगे।

धम्मचक्कप्पवत्तनसुत्त प्रवचन, (भाग ३/४)

*(पूज्य गुरुजी ने साधकों के लाभार्थ जनवरी, १९९१ में धम्मगिरि पर इस सुत्त की व्याख्या हिंदी एवं अंग्रेजी में करते हुए इसे बहुत अच्छी तरह से समझाया है। सितंबर, १६ की पत्रिका में इसका प्रथम चरण छपा था, मार्च, १७ में क्रमशः दूसरा, अगस्त १७ में यह **तीसरा** चरण है।.. सं.)*

चार आर्य सत्यों की पूरी जानकारी हो

क्रमशः ...

... चार आर्य सत्यों की ये सारी की सारी चारों अवस्थाएं हमारी अनुभूति पर उतरें। फिर कहते हैं- **'यावकीवञ्च मे, भिक्खवे, इमेसु चतूसु अरियसच्चेसु'-** ये जो चार आर्य सत्य हैं; हर एक आर्य सत्य की **'तिपरिवट्टं'**- तीन प्रकार से, यानी, **'द्वादसाकारं'**- बारह प्रकार से पूरी जानकारी करनी है। जानकारी कर ली तब कहा, मैंने सत्य की पूरी जानकारी कर ली। इन बारह में से स्वयं गुजर गया। जब तक नहीं गुजर गया तब तक- **'यथाभूतं ञाणदस्सनं न सुविसुद्धं अहोसि'-** मेरा ज्ञान, मेरा दर्शन शुद्ध नहीं हुआ। सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन (दार्शनिक मान्यता नहीं) के बिना कोई व्यक्ति सम्यक संबुद्ध नहीं बनेगा। उसकी सारी वाणी इसी प्रकार कायम रहेगी, लेकिन बिगड़ जायगी। क्योंकि अनुभूति पर उतारना भूल जायँगे। कहेंगे हमारी मान्यता ही सम्यक ज्ञान है, सम्यक दर्शन है।

सम्यक ज्ञान वह होता है जो हमारे अनुभव पर उतरे। उस अनुभव से जो ज्ञान जागा वह हमारा अपना ज्ञान, सम्यक ज्ञान है; सचमुच ज्ञान है; सही ज्ञान है। अनुभूति से जागा हुआ ज्ञान, किसी की कही-सुनी बात से नहीं। ऐसा ज्ञान, ऐसा दर्शन तब तक विशुद्ध नहीं होता जब तक कि वह सम्यक न हो जाय, और सम्यक तब तक नहीं होता जब तक कि स्वानुभूति पर न उतर जाय। तब कहते हैं- **'यथाभूतं-** जैसा है, वैसा है। **"यथाभूतं ञाणदस्सनं न विसुद्धं अहोसि"** जब तक सुविशुद्ध नहीं हुआ- तब तक **'नेव तावाहं'-** मैंने इस बात का दावा नहीं किया कि **'सदेवके लोके समारके सब्रह्मके सस्समणब्राह्मणिया पजाय सदेवमनुस्साय 'अनुत्तरं सम्मासम्बोधिं अभिसम्बुद्धो'ति पच्चञ्ञासिं।'** ऐसे संसार में जिसमें देव भी हैं, ब्रह्म भी हैं, मार भी है, श्रमण भी हैं, ब्राह्मण भी हैं, यह सारी प्रजा है। इनके बीच में मैंने इस बात को स्वीकार नहीं किया कि 'मुझे सम्यक संबोधि प्राप्त हो गयी'। अनेक लोग उस समय भी थे भारत में, उसके पूर्व भी थे, जो केवल बुद्धि के स्तर पर धर्म को समझ कर इस बात का दावा करते थे- 'हम बुद्ध हो गये'। यह व्यक्ति कहता है कि जब तक मेरी अनुभूति पर ये चारों बातें बारह प्रकार से नहीं उतर गयीं, तब तक मैंने दावा नहीं किया कि मुझे ज्ञान प्राप्त हो गया। मुझे सम्यक संबोधि प्राप्त हो गयी। आगे कहते हैं:--

"यतो च खो मे, भिक्खवे, इमेसु चतूसु अरियसच्चेसु एवं तिपरिवट्टं द्वादसाकारं यथाभूतं ञाणदस्सनं सुविसुद्धं अहोसि, ...

-- ये चारों आर्य सत्य इन तीन चरणों में, बारह प्रकार से जब अनुभूतियों से मेरा ज्ञान और दर्शन सुविशुद्ध हुआ; सारे संसार में जहां देवता हैं, मार है, ब्रह्म हैं, श्रमण हैं, ब्राह्मण हैं, प्रजा हैं, मनुष्य हैं; तब मैंने यह बात स्वीकार की। **'अनुत्तरं सम्मासम्बोधिं अभिसंबुद्धो'ति'**। तब कहा-- मुझे सम्यक संबोधि प्राप्त हुई। इस बात को मैंने स्वयं स्वीकारा और घोषणा की। **'ञाणञ्च पन मे दस्सनं उदपादि'-** अब सही माने में ज्ञान उत्पन्न हुआ, सही माने में दर्शन उत्पन्न हुआ। उस अवस्था का अनुभव हुआ जहां पहुँचने वाला आदमी यह महसूस कर लेता है कि अब मेरा पुनर्जन्म नहीं होगा।

यह पुनर्जन्म नहीं होना अंधविश्वास की बात नहीं है। उस अर्हंत अवस्था के निरोध समापत्ति का अनुभव करके जब आदमी निकलता है तब सारी बातें बहुत स्पष्ट हो जाती हैं। जितने-जितने जन्म देनेवाले संस्कार थे देख, सारे निकल गये। एक भी नहीं है। और इस तरह के जन्म देनेवाले नये संस्कार अब बन ही नहीं सकते। यह अवस्था प्राप्त हो गयी। तो इस अवस्था को अपनी अनुभूति पर उतार करके जब दर्शन करता है तब कहता है- **'अकुप्पा मे चेतोविमुत्ति'**। अरे, विमुक्ति मुझे प्राप्त हो गयी। **'अयमन्तिमा जाति'-** यह अंतिम जीवन है। **'नत्थिदानि पुनब्भवोति'-** अब फिर नया भव, नया जन्म होने वाला नहीं।

ऐसा दावा, सच्चाई को अनुभूति पर उतारकर जो व्यक्ति करता है, वह सचमुच मुक्त हुआ। और सच्चाई को अनुभूति पर उतारे बिना केवल दार्शनिक मान्यता के आधार पर कहता है तो बेचारा स्वयं उलझा हुआ है, औरों को उलझाता है।

यह बुद्ध की संबोधि है कि वह इस अवस्था पर पहुँचा। इन चारों आर्य सत्यों को इन तीनों प्रकार से अपनी अनुभूतियों पर उतारकर उस अवस्था पर पहुँचा है जो मुक्त अवस्था है और तब घोषणा करता है 'अब मेरा पुनर्जन्म नहीं है'। मैंने उस अवस्था का स्वयं साक्षात्कार किया। भगवान की इस वाणी को सुनकर वे पंचवर्गीय भिक्षु बड़े प्रसन्न चित्त हुए।

एक बात और समझ लेनी चाहिए कि ये पांचों के पांचों भिक्षु भगवान के विरोध में भाग गये थे। क्योंकि भारत में एक मान्यता इस प्रकार जड़ हो गयी थी कि शरीर को दंड दिए बिना मुक्ति मिल ही नहीं सकती। और इस व्यक्ति ने शरीर को दंड देने के कितने काम किये, छः वर्षों तक इतना दंड दिया। अब क्योंकि इसके पहले आठ ध्यान कर चुका था तो भीतर देखा कि इस शरीर को दंड देने

से जरा-सा भी लाभ नहीं हुआ। तब उसको त्याग दिया और मध्यम मार्ग की ओर गया। जैसे ही त्याग दिया इन्होंने समझा कि यह आदमी तो भ्रष्ट हो गया। यह भ्रष्ट-योगी है। यह कैसे मुक्त होगा? तो उसके विरुद्ध होकर चले गये।

अब जब वह आ रहा है तब कहते हैं-- यह तो भ्रष्ट-योगी है। हम इसकी कोई बात नहीं सुनेंगे। इसका कोई सम्मान नहीं करेंगे। क्योंकि राजपुत्र है, राजघराने से आया है इसलिए बैठने का आसन जरूर दे देंगे, और कुछ नहीं करेंगे। वही लोग अब प्रसन्न चित्त से स्वीकार करते हैं सारी बात। क्योंकि यथार्थ नजर आता है कि अरे, और सारी बातें अपनी जगह। मुख्य बात तो यह कि दुःख है, और देख, यह दुःख का कारण है। और देख, यह दुःख का निवारण है और दुःख के निवारण का यह रास्ता है। और यह कहता है कि इन चारों बातों का कोरा उपदेश नहीं, मैं इसे अपने अनुभव पर उतार चुका। अब तुम्हें समझाने आया हूं, तुम भी अपने अनुभव पर उतारो।

यह प्रथम धर्म-चक्र-प्रवर्तन। प्रथम धर्म-चक्र-प्रवर्तन तो दरअसल बोधिवृक्ष के नीचे ही हुआ। अपने भीतर जो धर्म-चक्र चलाया। लोक-चक्र ही लोक-चक्र चल रहा था; हर व्यक्ति अपने भीतर लोक-चक्र, लोक-चक्र, दुःख-चक्र, दुःख-चक्र यही चलाता है। यह पहली बार अपने भीतर धर्म-चक्र चलाया। माने धर्म को अनुभूतियों पर उतारा। जो बात मैंने कभी सुनी ही नहीं थी, वह अपनी अनुभूतियों पर उतारी। **पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि..**। धर्मचक्षु जागे। जो बात पहले कभी सुनी नहीं थी। धर्म के नाम पर न जाने क्या-क्या सुनता रहा। अब धर्म के नाम पर सही बात-- यह कानून है, यह नियम है, यह विधान है, यह प्रकृति है, यह नियति है। सारी बात समझ में आने लगी। उन सारी बातों को अपनी अनुभूति पर उतारता है तो सम्यक संबुद्ध होता है। जो धर्म-चक्र अपने भीतर जगाया अब वह बाहर चले। व्यक्ति-व्यक्ति के भीतर धर्म-चक्र चले और वह दुःख-चक्र के बाहर निकल जाय, लोक-चक्र के बाहर निकल जाय। लोगों में धर्म-चक्र जगाने का पहला काम किया, इसलिए प्रथम उपदेश है। यानी, लोगों के लिए धर्म-चक्र पहली बार जागा।

अब जो पांच लोग बैठे थे, उनको सारी बात समझ में आयी। उनका मन बड़ा प्रसन्न हुआ। अरे, यह बात तो बहुत ठीक कहता है। हम इसलिए भागे थे कि यह शरीर को दंड नहीं दे रहा। शरीर को बिना दंड दिये भी इन चारों बातों का दर्शन हो सकता है! यह बात समझ में आ गयी।

'इमस्मिञ्च पन वेय्याकरणस्मिं भञ्ञमाने आयस्मतो कोण्डञ्ञस्स विरजं वीतमलं धम्मचक्खुं उदपादि– "यं किञ्चि समुदयधम्मं, सब्बं तं निरोधधम्म"न्ति।' यह जो बार-बार आगे अनेक सूत्र पढ़ेंगे, बुद्ध-वाणी पढ़ेंगे, तो एक बात बार-बार ऐसी आयगी जो अपनी ही नासमझी की वजह से हमारे मन में एक संदेह पैदा करेगी कि यह कैसी बात है? एक तरफ भगवान कहते हैं 'एकायनो मग्गो'। अपने भीतर शरीर और चित्त की अवस्थाओं का अनुभव करते हुए, चार सतिपट्ठान करते हुए ही मुक्त अवस्था पर पहुँचेगा। भगवान की इतनी बड़ी घोषणा है और दूसरी ओर बार-बार देखेंगे कि कहीं भगवान उपदेश दे रहे हैं और उस उपदेश के समाप्त होने पर इतने लोग सोतापन्न हो गये, इतने लोग सकृदागामी हो गये, अर्हंत भी हो गये, इस तरह की बातें बार-बार आयेंगी। तो संदेह होगा कि एक ओर 'एकायनो मग्गो', और दूसरी ओर केवल उपदेश ही रास्ता बन गया न! माने किसी सम्यक संबुद्ध का उपदेश सुनने से ही मुक्त हो जायँगे, यह दूसरा रास्ता है न! यह ज्यादा सरल रास्ता है तो काहे उस पर चलें? दोनों में विरोधाभास होगा।

अब इस बात को समझते हैं। साधक गहराइयों में जायगा तो उसे स्पष्ट होगा कि बुद्ध जैसा व्यक्ति जब बोल रहा है, धर्म की बात समझा रहा है तो केवल वाणी नहीं है। वाणी के साथ-साथ धर्म-धातु है, निर्वाण-धातु है, मैत्री-धातु की तरंगें हैं। और जो-जो व्यक्ति किसी-किसी जन्म में उनके साथ रहे हैं और अपनी पारमिताएं पूर्ण करते-करते इस अवस्था पर पहुँचे हुए हैं कि यह व्यक्ति जब सम्यक संबुद्ध बनेगा तब इसके साथ जन्म लेकर हम मुक्त अवस्था तक पहुँचेंगे। जो ऐसे लोग आये हैं, तब जब ये बोले जा रहे हैं, धर्म समझाये जा रहे हैं; वे सुन रहे हैं लेकिन धर्म सुनते-सुनते भीतर तरंगें जागने लगीं। भीतर तरंगें जाग रही हैं, अनित्यबोध समझ में आ रहा है। भीतर 'अनित्य है, अनित्य है' यह समझ है। वह उपदेश समाप्त होता है तब तक निर्वाणिक अवस्था प्राप्त हो गयी।

कुछ लोगों को प्राप्त हुई, कुछ को नहीं हुई। यह अवस्था जो प्राप्त होती है, यह भीतर उन चारों आर्य सत्यों, माने चारों सतिपट्ठान की अपने आप अनुभूति हुई, तब वह अवस्था प्राप्त होती है। केवल उपदेश से नहीं हो जाती। तो केवल उपदेश से कोई व्यक्ति अर्हंत हो जाय, यह मिथ्या धारणा मन से निकाल देनी चाहिए।

उस समय जब उन पांचों व्यक्तियों को यह कहा गया, तब उनमें से एक को यह अवस्था प्राप्त हुई। पांच ब्राह्मणों में से एक कौंडण्य को, **'विरजं'-** जहां रज नहीं है, रज माने राग नहीं है, **'वीतमलं'** जहां कोई मैल नहीं है। ऐसे धर्म-चक्षु उत्पन्न हुए। वह केवल बुद्धि की बात नहीं है। सारी सच्चाई उसको अनुभूति पर उतरी। क्या सच्चाई अनुभूति पर उतरी? **'यं किञ्चि समुदयधम्मं'-** जो-जो उत्पन्न होने वाले धर्म हैं, वे सारी अवस्थाएं जिनका उत्पाद है, **'सब्बं तं निरोधधम्मं'-** उन सबका निरोध होना भी स्वभाव है। उदय होना, व्यय होना- यह स्वभाव तो हर विपश्यना करने वाला व्यक्ति जान जायगा। विपश्यना शुरू ही इससे होती है। देख, उदय हो रहा है, व्यय हो रहा है-- **'समुदयधम्मानुपस्सी विहरति, वयधम्मानुपस्सी विहरति'**।

निर्वाणिक अवस्था की पहली बार अनुभूति होगी तब 'निरोधधम्मा'। तब पहली बार निरोध की अनुभूति हुई। यह जो उत्पन्न होता है, व्यय होता है, यह चक्र तो चल ही रहा है। लेकिन एक अवस्था ऐसी जहां निरोध हो जाता है। जहां उसकी उत्पत्ति ही नहीं होती। तो यह बात बतायी गयी कि उस एक व्यक्ति को यह सारी बात सुनते-सुनते यह अवस्था प्राप्त हो गयी। ऐसा धर्म-चक्षु जाग गया, माने विपश्यना भीतर जाग गयी और जागते-जागते वह स्रोतापन्न-फल की पहली अवस्था, **'यं किञ्चि समुदयधम्मं'** जो-जो समुदय होनेवाली सच्चाइयां हैं, **'सब्बं तं निरोधधम्मं'-** उनके धर्म का निरोध है। यह उसने अनुभव से जान लिया। माने पहली बार उस व्यक्ति ने निरोध की अवस्था का साक्षात्कार कर लिया। पहली बार निर्वाण का साक्षात्कार कर लिया। यह व्यक्ति स्रोतापन्न हुआ। बाकी चार नहीं हुए, जबकि पांच आदमियों को धर्म सिखाया जा रहा है।

एक बात और समझनी चाहिए कि कोई व्यक्ति सम्यक संबुद्ध होता है तो मुक्तिदाता नहीं होता। वह हमें मुक्ति नहीं दे सकता। वह हमको मार्ग देता है। मुक्तिदाता तो हम ही हैं अपने। हमने अनेक जन्मों से कितना काम किया है, और सही मार्ग चलते हुए हमने बहुत से विकार पहले ही निकाल लिये हैं, थोड़े से रहे हैं, और अब तरीका मिल गया तो हम तुरंत डुबकी लगा लेंगे निरोध अवस्था की। हमारे पास बहुत ज्यादा विकार इकट्ठे हैं, हमें ज्यादा समय लगेगा मुक्त होने के लिए। लेकिन काम हमें ही करना पड़ेगा। अगर वह मुक्तिदाता होता तो इन पांचों को निर्वाणिक अवस्था की अनुभूति करा देता। और केवल स्रोतापन्न की क्यों, उन्हें अर्हंत अवस्था की अनुभूति करा देता। नहीं करा पाया न! तो यह भ्रम रखना कि कोई गुरु हमें तार देगा, या कोई देव, ईश्वर, ब्रह्म तार देगा, इससे बाहर निकलना चाहिए। हमें ही तरना है और इन चारों के चारों आर्य सत्यों का साक्षात्कार हमें करना है। और वह इस विपश्यना द्वारा होता है। यह

बात समझकर काम करेगा तो उसके बाहर निकल जायगा।

किसी व्यक्ति का सम्यक संबुद्ध बन जाना सरल बात नहीं है। न जाने कितने कल्पों तक, असंख्य कल्पों तक पारमिताओं को बढ़ाते-बढ़ाते, पारमिताएं वही हैं लेकिन कितनी बड़ी मात्रा में बढ़ानी पड़ती हैं। केवल अपने आपको ही मुक्त करना हो तो थोड़े से कल्पों में ही, उतनी ही मात्रा बढ़ा कर मुक्त अवस्था तक पहुँच जायगा। लेकिन जिसे सम्यक संबुद्ध बनना है, जिससे वह औरों को मुक्ति का मार्ग दे सके, अनेक लोगों की मुक्ति में सहायक बन सके, उस अवस्था तक पहुँचना है तो असंख्य जन्मों व कल्पों तक काम करते-करते पारमिता बढ़ानी सरल बात नहीं होती। इस अवस्था तक पहुँचना अपने आपमें एक महत्त्वपूर्ण बात है। इस अवस्था तक पहुँच कर अपने भीतर धर्म-चक्र चलाया, वही अपने आपमें बहुत महत्त्वपूर्ण है। और जब यह धर्म-चक्र लोगों के लिए, अन्य प्राणियों के लिए चलाया कि अन्य प्राणी भी इसका लाभ लेकर मुक्त अवस्था तक चले जायँ, तो बहुत-बहुत बड़ी महत्त्वपूर्ण घटना घटती है। इसका प्रभाव सारे ब्रह्मांड पर पड़ता है, सारे विश्व पर पड़ता है। उसकी बात आगे समझायी गयी।

'पवत्तिते च पन भगवता धम्मचक्के भुम्मा देवा सद्दमनुस्सावेसुं – "एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं अप्पटिवत्तियं समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मि"न्ति। -- भगवान ने जब यह धर्म-चक्र प्रवर्तन किया तो अनेक ऐसे भूमि के देव- भूमि पर रहने वाले देवता, अदृश्य प्राणी। सारे विश्व में, सारे चक्रवालों में ऐसे अनेक प्राणी होते हैं जो अनेक जन्मों से मुक्ति के मार्ग पर चलने का प्रयास कर रहे हैं, इनमें से अनेक ऐसे होंगे जिनमें धर्म का बीज था, उनको जब यह तरंग मिली, मुक्ति की वाइब्रेशन मिली तो बड़ा आह्लाद हुआ। इस आह्लाद के मारे वे इस बात की घोषणा करते हैं-- "अरे देखो, भगवान ने ऋषिपत्तन मृगदाय में यह अनुत्तर, यानी, इससे ऊंची कोई अवस्था नहीं होती, ऐसा धर्म-चक्र का प्रवर्तन किया। लोक में दूसरा कोई प्राणी इस तरह धर्म-चक्र का प्रवर्तन नहीं कर सकता। जिसने धर्म-चक्र अपने भीतर जगा करके मुक्त अवस्था प्राप्त कर ली, वही व्यक्ति धर्म-चक्र का प्रवर्तन करेगा। अरे देखो, इस व्यक्ति ने धर्म-चक्र का प्रवर्तन किया। ऐसे हर्ष के उद्गार उन प्राणियों के मुख से निकले जो भूमि के देव थे।

और यह जो आवाज निकली, फैलती है। यह वाइब्रेशन फैलती है- तो **"भुम्मानं देवानं सद्दं सुत्वा"**-- इन भूमिक देवों, भूमि के देवों की आवाज सुनकर जो **चतुर्महाराजिक** देवलोक है, उस देवलोक के प्राणियों तक यह बात पहुँची, उन्होंने बड़े हर्ष के साथ इस बात की घोषणा की-- कोई व्यक्ति इस प्रकार का धर्म-चक्र-प्रवर्तन नहीं कर सकता। देखो, इस सम्यक संबुद्ध ने ऐसा धर्म-चक्र प्रवर्तन किया!

और अब कैसे यह आवाज इस स्थूल धरती से ऊपर सूक्ष्मता की ओर उठती चली जा रही है। चतुर्महाराजिक देवों की आवाज **'तावतिंस'** देवलोक तक पहुँची; उनके हर्ष की घोषणा **'यामा'** देवलोक तक पहुँची; यामा देवों के हर्ष की घोषणा **'तुषित'** देवलोक तक पहुँची; तुषित देवलोक के जो प्राणी थे, उन्होंने भी यही घोषणा की। उनके हर्ष की घोषणा **'निर्माणरति'** देवलोक तक पहुँची; उनकी आवाज सुनकर के **'परनिम्मितवसवत्ती'** देवलोक के देवों ने भी यह घोषणा की। इस प्रकार एक से एक ऊंचे लोक, सूक्ष्म से सूक्ष्म... 'सद्दमनुस्सावेसुं'। और इसके ऊपर ब्रह्मलोक की बारी आयी। इसके ऊपर- **ब्रह्मपरिषदलोक** के लोगों ने 'सद्दमनुस्सावेसुं'। उसी प्रकार **'ब्रह्मपुरोहिता** देवा सद्दमनुस्सावेसुं'- यह सोलह जो ब्रह्मलोक हैं, उनमें एक-एक, एक-एक करके ब्रह्मपरिषद से ब्रह्मपुरोहित देवलोक में; और उसी प्रकार **महाब्रह्मलोक** के जो प्राणी हैं, उन्होंने यह आवाज दी। उसी प्रकार ... **'परित्ताभा** देवा सद्दमनुस्सावेसुं'। वैसे ही 'परित्ताभानं देवानं सद्दं सुत्वा **अप्पमाणाभा** देवा सद्दमनुस्सावेसुं'- जिनकी आभा अपरमित है, उस लोक के लोगों ने यह घोषणा की। उसी प्रकार **आभस्सरा** (आभास्वर देवलोक के लोगों ने)- ब्रह्मलोक के लोगों ने, उसी प्रकार **परित्तसुभा'** (परिमित शुभ) इस ब्रह्मलोक के लोगों की यह घोषणा हुई। उसी प्रकार **अपरिमित शुभ** ब्रह्मलोक के देवों की यह घोषणा हुई। उसी प्रकार **सुभकिण्हकानं'** (जहां पर शुभ्र प्रकार की किरणें निकलती हैं इस प्रकार के ब्रह्मलोक) के लोगों की यह घोषणा हुई। उसी प्रकार **वेहप्फला**... फिर **अविहा देवा** ... यह अविहा सोलह ब्रह्मलोकों में जहां एक-एक ब्रह्मलोक की बात आयी। ऊंची से ऊंची, और ऊंची अवस्थाएं।... ये सारे ब्रह्मलोक, ये सारे देवलोक क्या हैं? हमारे ही कर्म-संस्कारों की बैंक हैं। हमारे वाइब्रेशंस उस प्रकार से वहां जाकर समरस हो जाते हैं। और मृत्यु के समय वैसे ही वाइब्रेशन जागे तो तुरंत खिंचे हुए हम वहां चले जायँ।

तो जो हम शरीर और वाणी से सत्कर्म करते हैं-- दान देते हैं, शील-पालन करते हैं, किसी की सेवा करते हैं, किसी का भला करते हैं, उसकी जो वाइब्रेशन होती है वह हमको देवगति, (छः देवलोक बताये) एक से एक सूक्ष्म वाइब्रेशन के साथ, हमको समरस करती चली जायगी और मृत्यु के समय वैसी वाइब्रेशन जागी, तो प्रकृति हमें खींचकर वहां ले जायगी। .....

क्रमशः भाग-४ ...

धम्म उपवन, बाराचकिया (धम्मगृह)

बाराचकिया, बिहार के पूर्वी चम्पारन जिले में है जहां पूज्य गुरुजी ने १२ से २२ मार्च, १९७० में ४८ लोगों का पहला शिविर चीनी-मिल में संचालित किया था। इसके बाद वहां और भी कई शिविर लगे परंतु अभी तक कोई विपश्यना केंद्र नहीं बन पाया। शहर के बीच एक छोटी-सी जगह है जहां एक-दिवसीय शिविर व सामूहिक साधना होती है। इसी स्थान पर अब तीन दुमंजिले भवन बना कर केंद्र का रूप दिया जा रहा है जिसमें लगभग ४५-५० लोगों का शिविर लग सके। कार्यारंभ हो चुका है। जो भी साधक-साधिका चाहें, इस महापुण्य में भागीदार बन सकते हैं। **संपर्क**-- श्री सज्जन गोयन्का, फोन- 9431245971, 7766834500. **Bank A/c.:** Dhamma Upavana Vipassana Sadhana Kendra, Bank of India, Branch- Kunriya. A/c. no. 44461000002841, IFSC- BKID0004446. **Email:** puddagal@gmail.com;

धम्मभण्डार विपश्यना केंद्र, भंडारा, महाराष्ट्र

इसके द्वितीय चरण में ६० साधकों तक के लिए धम्म-कक्ष, आचार्य-निवास, महिला-पुरुष निवास, शौचालय, सौर्य-ऊर्जा... आदि का काम करना है। इस महापुण्यवर्धक कार्य में भागीदार होने के इच्छुक व्यक्ति निम्न पते पर संपर्क करें-- विपश्यना बहुउद्देशीय सेवा संस्था, सहकार नगर, भंडारा (महाराष्ट्र) **बैंक-** विदर्भ-कोकण ग्रामीण बैंक शाखा, भंडारा, A/c. no. 500410100004910, IFS Code- BKI DOWAINGB (80-G, आयकर की छूट है) फोन- 9422823886, 9423673572, **ईमेल-** ssbagde.ngp@gmail.com; info@bhandara.org

---

धम्मकेतु विपश्यना केंद्र, दुर्ग में बालशिविर शिक्षक कार्यशाला

२२ सितंबर, प्रातः ८ बजे से २४ सितंबर, सायं ५ बजे तक।
संपर्क-- श्री पी.के. नंदी, ९४२५२४२६३६, ईमेल-- pknandip@rediffmail.com

अतिरिक्त उत्तरदायित्त्व

१. डॉ. शरद बादोले, धम्म गोण्ड के केंद्र-आचार्य के रूप में सेवा

नये उत्तरदायित्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१-२. श्री प्रवीण एवं श्रीमती कुसुम झवेरी, भुज
3. U Maung Maung Lwin, Myanmar
4. Win Maung, Myanmar
5. Soe Min Aye, Myanmar
6. Daw Aye Mon, Myanmar
7. Daw Khin Aye Kyaing, Myanmar
8. Daw Mya San, Myanmar
9. Daw Kay Thi, Myanmar

नव नियुक्तियां

भिक्षु आचार्य

1.Ven. Bhikkhuni Kotte Dhammadinna, Sri Lanka

सहायक आचार्य

१. कु. साराह रंगूनवाला, पुणे,
२-३. डॉ. चंद्रकांत एवं श्रीमती सरला चौहान, पुणे
४. श्री राम लिंगा रेड्डी, नैनी, तेलंगाना
५. श्री अनजी रेड्डी बद्दाम, तेलंगाना
६. श्री मुरली नेलकंती, आंध्रप्रदेश
७. श्री सुभाष चंदर इंदोरिया, हरयाणा
८. श्री उमेश देशपांडे, ठाणे
9. Mrs Letchmee Nadeson, Malaysia

बालशिविर शिक्षक

१. श्रीमती अल्पना मुटसुद्दी, कोलकाता
२. सौ. लाबोन्या बरुआ, कोलकाता
३. कु. नन्दिता प्रसाद, कोलकाता
4. Mr. Cheong Wing Kit, Thomas Singapore
5. Ms. Jamie , Lee Bee Choo Singapore

Registered No. NSK/235/2015-2017

विपश्यना पगोडा परिसर में वृहत् संरक्षणागार की योजना

पगोडा परिसर में एक बड़े आंगुलिक अभिलेखागार या संरक्षणागार (डिजिटल आर्काइव्स सेंटर) की योजना पर काम चल रहा है जिसमें पूज्य गुरुजी ने जब से काम शुरू किया तब से लेकर आज तक के सभी प्रकार के आलेख, टिप्पड़ियां (नोट्स), पुस्तकें, छायाचित्र (फोटो), कथानक (ऑडियो), चलचित्र (वीडियो), विपश्यना विशोधन विन्यास द्वारा किये गये सभी प्रकार के शोधकार्य, विपश्यना पगोडा संबंधी फोटोज, नक्शे व अन्य संबंधित दस्तावेज आदि का समावेश होगा।

यह कार्य कई वर्षों तक चलता रहेगा। कार्यारंभ करने के लिए हमें अनेक कम्प्युटर, स्कैनर, प्रिंटर आदि के साथ सभी प्रकार के सामान रखने के लिए समुचित स्थान एवं पूरी परियोजना का संचालन करने वाले कार्यकर्ताओं के वेतन आदि का भी ध्यान रखना है। सभी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए लगभग पच्चीस लाख का खर्च आयेगा, तथा वेतनादि के लिए लगभग १५-२० लाख वार्षिक लगेंगे।

'विपश्यना विशोधन विन्यास' का रजिस्ट्रेशन सेक्शन ३५ (१) (३) के अंतर्गत हुआ है, जिससे दानदाताओं को १२५ प्रतिशत आयकर की छूट प्राप्त होगी। जो भी साधक-साधिका इस पुण्य में भागीदार बनना चाहें वे निम्न पते पर संपर्क कर सकते हैं-- 1. Mr. Derik Pegado, 9921227057. or 2.Sri Bipin Mehta, Mo. 9920052156, Email: audits@globalpagoda.org

मंगल मृत्यु

ल्युपिन लैब के मालिक श्री देशबंधु गुप्ता का शरीर गत २६ जून को शांत हुआ। पहला शिविर करने के बाद वे विपश्यना से इस प्रकार जुड़े कि धर्मप्रसार में रीढ़ की हड्डी जैसे बन गये। ग्लोबल पगोडा एवं केंद्रों के अतिरिक्त **'विपश्यना विशोधन विन्यास'** के संस्थापन, विशोधन व प्रकाशन में अनुपम योगदान दिया। अपनी साधना पुष्ट करने के लिए वे प्रारंभिक दिनों लगभग हर सप्ताहांत इगतपुरी चले आते। इस प्रकार उनका धर्मबल और सेवाभाव बढ़ता गया जो कि उन्हें धर्मपथ पर आगे बढ़ते रहने में सतत सहायक सिद्ध होगा। उनके प्रति धर्म परिवार की समस्त मंगल मैत्री!

पगोडा परिसर में धर्मसेवकों तथा साधकों के लिए निःशुल्क आवास-सुविधा

वर्ष में चार बार **विश्व विपश्यना पगोडा,** गोराई, बोरीवली (मुंबई) में एक दिवसीय महाशिविरों का आयोजन होता है। उनमें शामिल होने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं, परंतु दुर्भाग्य से वहां उनके रात्रि-निवास की कोई समुचित सुविधा नहीं है। अतः योजना बनायी गयी कि पगोडा परिसर में अलग से एक ३-४ मंजिले भवन का निर्माण किया जाय, जिसमें कुछ स्थायी धर्मसेवकों के अतिरिक्त बड़ी संख्या में आने वाले साधकों के लिए कुछ एकाकी तथा कुछ सामूहिक निवास की व्यवस्था की जा सके, ताकि रात्रि-विश्राम के बाद वे सुबह आराम से उठ कर भली प्रकार साधना का लाभ उठा सकें। तदर्थ जो भी साधक साधिका इस पुण्य में भागीदार होना चाहें, वे निम्न पते पर संपर्क करें:--

1. Sri Bipin Mehta, Mo. 9920052156, 2. Mr. Derik Pegado, 9921227057, **Email:** audits@globalpagoda.org

ग्लोबल विपश्यना पगोडा में २०१७/२०१८ के एक-दिवसीय महाशिविर

रविवार, १ अक्टूबर-- शरद पूर्णिमा एवं **पूज्य गुरुजी की पुण्यतिथि** के उपलक्ष्य में तथा **रविवार, १४ जनवरी,** २०१८ **पूज्य माताजी** एवं **सयाजी ऊ बा खिन** की **पुण्य-तिथि** के उपलक्ष्य में-- **समयः** प्रातः **११** बजे से अपराह्न **4** बजे तक। 3 बजे के प्रवचन में बिना साधना किये लोग भी बैठ सकते हैं। बुकिंग के लिए कृपया निम्न फोन नंबरों या ईमेल से शीघ्र संपर्क करें। कृपया बिना बुकिंग कराये न आयें और **समग्गानं तपो सुखो**- सामूहिक तप-सुख का लाभ उठाएं। **संपर्कः** 022-28451170, 022-28452111, 8291894644 - Extn. 9, (**फोन बुकिंगः 11** से **5** बजे तक, प्रतिदिन) **Online Regn.: www.oneday.globalpagoda.org**

दोहे धर्म के

निज अनुभव से जान ले, भले-बुरे का ज्ञान।
करे पराक्रम धर्म-तप, सधे अमित कल्याण॥

कदम-कदम पर सत्य ही, अनुभव होता जाय।
ऐसा सतपथ धरम का, मंजिल तक पहुँचाय॥

दर्शन मत की मान्यता, सुनी सुनाई बात।
निज अनुभव बिन ना मिले, शुद्ध सत्य अवदात॥

करे कल्पना जल्पना, कुहरा गहरा होय।
उदय होय रवि धरम का, फिर उजियारा होय॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धर्म रा

अंधभक्ति स्यूं मानतां, दरसन मिथ्या होय।
निज अनुभव स्यूं जाणतां, दरसन सम्यक होय॥

कोरै बुद्धि बितरक स्यूं, मान्यां सत्य न होय।
अपणै भीतर अनुभवै, सम्यक दरसन सोय॥

जब तक करसी कल्पना, तब तक मिथ्या होय।
जीं दिन अनुभवसी स्वयं, उण दिन सम्यक होय॥

भीतर रो चेतो रवै, उदय अस्त रो ग्यान।
करमकांड ना बण सकै, जो कुछ करै सुजान॥

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट - इंडियन ऑईल, ७४, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.६, अजिंठा चौक, जलगांव - ४२५ ००३, फोन. नं. ०२५७-२२१०३७२, २२१२८७७
मोबा.०९४२३१८७३०१, Email: **morolium_jal@yahoo.co.in**
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाषः(02553) 244086, 244076076.
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, जी-२५९, सीकॉफ लिमिटेड, ६९ एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. **बुद्धवर्ष 2561,** श्रावण पूर्णिमा, 7 अगस्त, 2017

वार्षिक शुल्क रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/235/2015-2017**

Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

DATE OF PRINTING: 28 July, 2017, DATE OF PUBLICATION: 7 August, 2017

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 243712,
243238. **फैक्स :** (02553) 244176
Email: vri_admin@dhamma.net.in;
course booking: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org